अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम का कोड	**:**	**बी. सी. ओ. एस. -185**
पाठ्यक्रम का शीर्षक	**:**	**उद्यमिता**
सत्रीय कार्य का कोड	**:**	**बी. सी. ओ. एस. -185/टी. एम. ए./2026- 27**
खण्डों की संख्या	**:**	**सभी खण्ड**

अधिकतम अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड – क

1. 'उद्यमिता' से आप क्या समझते हैं? भारत में उद्यमिता विकास की आवश्यकता की व्याख्या करें और आर्थिक विकास में उद्यमिता की भूमिका पर चर्चा करें। **(10)**

2. उद्यमशीलता दक्षताएँ (Entrepreneurial Competencies) क्या हैं? उन प्रमुख व्यवहारिक गुणों और कौशलों की पहचान करें और समझाएं जो एक सफल उद्यमी को एक पारंपरिक प्रबंधक से अलग करते हैं। । **(10)**

3. व्यवहार्यता अध्ययन (Feasibility Study) क्या है? बाज़ार व्यवहार्यता विश्लेषण (market feasibility analysis) के महत्व की व्याख्या करें और इसके प्रमुख घटकों का वर्णन करें। **(10)**

4. एक नए उपक्रम के वित्तपोषण के लिए उद्यमी को उपलब्ध विभिन्न निधि स्रोतों की व्याख्या करें। वित्तीय और गैर-वित्तीय संसाधन जुटाने के बीच अंतर स्पष्ट करें। **(10)**

5. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs) की अवधारणा की व्याख्या करें। लघु स्तरीय उद्योगों के सामने आने वाली समस्याओं पर चर्चा करें और इन चुनौतियों पर काबू पाने में संस्थागत सहायता प्रणालियों (institutional support systems) की भूमिका स्पष्ट करें। **(10)**

खण्ड – ख

6. उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र (Entrepreneurial Eco-system) की अवधारणा की व्याख्या करें। नए उपक्रमों को बढ़ने में सहायक अनुकूल उद्यमशीलता परिवेश के प्रमुख तत्व क्या हैं? **(6)**

7. नवाचार (Innovation) और आविष्कार (Invention) के बीच अंतर स्पष्ट करें। रचनात्मकता और नवाचार उद्यमशीलता की सफलता में किस प्रकार योगदान देते हैं? **(6)**

8. व्यावसायिक योजना (Business Plan) क्या है? एक नए उद्यम के लिए सुसज्जित परियोजना रिपोर्ट (project report) में सम्मिलित किए जाने वाले आवश्यक तत्वों की व्याख्या करें। **(6)**

9. भारत में स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र को मज़बूत करने के लिए सरकार द्वारा अपनाए गए उपायों पर चर्चा करें। **(6)**

10. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (Ministry of MSME) द्वारा प्रारंभ की गई एस्पायर (ASPIRE) योजना की व्याख्या करें। यह उद्यमिता विकास में किस प्रकार सहायता करती है और लघु उद्यमों में नवाचार को कैसे बढ़ावा देती है? **(6)**

खण्ड – ग

11. **निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए :** **(5x2)**

(क) स्वोट विश्लेषण (SWOT Analysis)

(ख) महिला उद्यमी (Women Entrepreneurs)

12. **निम्नलिखित के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए:** **(5x2)**

(क) उद्यमी और प्रबंधक (Entrepreneur and Manager)

(ख) व्यावसायिक विचार और व्यावसायिक अवसर (Business Idea and Business Opportunity)

खंड – क

1. 'उद्यमिता' से आप क्या समझते हैं? भारत में उद्यमिता विकास की आवश्यकता की व्याख्या करें और आर्थिक विकास में उद्यमिता की भूमिका पर चर्चा करें। (10)

उत्तर

उद्यमिता वह प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति या समूह किसी आवश्यकता, समस्या या बाज़ार अवसर को पहचानकर उसे एक उपयोगी आर्थिक या सामाजिक गतिविधि में बदलता है। इसमें नया उद्यम स्थापित करना, संसाधनों का संयोजन करना, अनिश्चितता और जोखिम को स्वीकार करना, नवाचार करना तथा ग्राहकों के लिए मूल्य पैदा करना शामिल है। उद्यमी केवल व्यवसाय का मालिक नहीं होता; वह अवसरों को खोजता है, निर्णय लेता है, संसाधनों को जुटाता है और बदलती परिस्थितियों में संगठन को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी भी लेता है।

भारत में उद्यमिता विकास की आवश्यकता

1. रोजगार सृजन - भारत की बड़ी और युवा जनसंख्या के लिए केवल सरकारी तथा संगठित क्षेत्र की नौकरियाँ पर्याप्त नहीं हैं। नए उद्यम स्वयं-रोजगार के साथ अन्य लोगों के लिए भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा करते हैं। छोटे व्यवसाय स्थानीय स्तर पर कम पूँजी में अधिक रोजगार देने की क्षमता रखते हैं।

2. क्षेत्रीय संतुलन - उद्योग और सेवाएँ यदि केवल बड़े शहरों में केंद्रित रहें तो क्षेत्रीय असमानता बढ़ती है। ग्रामीण, अर्ध-शहरी और पिछड़े क्षेत्रों में उद्यमिता को प्रोत्साहन मिलने से स्थानीय संसाधनों का उपयोग होता है, आय के अवसर बढ़ते हैं और बड़े शहरों की ओर अनावश्यक पलायन कम हो सकता है।

3. स्थानीय संसाधनों और कौशल का उपयोग - भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में कृषि उत्पाद, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण, पर्यटन, पारंपरिक ज्ञान और स्थानीय कौशल उपलब्ध हैं। उद्यमी इन्हें बाज़ार योग्य उत्पाद और सेवाओं में बदलकर स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति देते हैं।

4. नवाचार और तकनीकी परिवर्तन - डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, फिनटेक, ई-कॉमर्स, स्वच्छ ऊर्जा और नई उत्पादन तकनीकों ने अनेक नए अवसर पैदा किए हैं। उद्यमिता इन तकनीकों को व्यावहारिक समाधान में बदलती है और अर्थव्यवस्था को अधिक उत्पादक बनाती है।

5. समावेशी विकास - महिलाओं, युवाओं, अनुसूचित जाति-जनजाति, कारीगरों और छोटे उत्पादकों को उद्यमिता के माध्यम से आय, स्वायत्तता और सामाजिक भागीदारी के नए अवसर मिलते हैं। इससे विकास का लाभ समाज के व्यापक वर्गों तक पहुँचता है।